बिलट महथा आदर्श महाविद्यालय, कहेड़ी, दरभंगा
(L.N.M.U)

मैथिली प्रतिष्ठा
स्नातक तृतीय खण्ड
पंचम पत्र - मैथिली साहित्यक इतिहास
आधुनिक काल मात्र

नरेश कुमार
सहायक प्राचार्य
मैथिली विभाग
दिनांक 29|09|2020

व्याख्यानक संक्षिप्त अंश (दोसर भाग)

प्रश्न :- स्वातंत्र्योत्तर मैथिली कथा- साहित्य पर निबन्ध लिखु।

उत्तर :- ..... 1950 सँ 1960 ई० धरिक प्रतिनिधि कथाकार किनका मानल जाय ई एक गोट विवादास्पद विषय बनि गेल अछि। तथापि श्री ललित, स्व० राजकमल चौधरी, श्री मायानन्द मिश्र, श्री हंसराज, श्री सोमदेव, श्री मणिपद्म, श्री शैलेन्द्र मोहन झा तथा श्रीमती कल्पनाशरण अद्वितीय प्रतिभासम्पन्न कथाकार छलाह। एहि युगमे 'त्रिफला'क लेखक अमरजी हास्य - व्यंग्यमे लागल रहला, 'जलसमाधि'क अमरजीक रूपमे 1970 ई० क पश्चात निखरला।

संचयिताक एक कथाकारक रूपमे श्री ललित कथा - शिल्पकेँ एक नव आयाम अवश्य देल - वर्णनचातुरी सँ प्रधानतया किन्तु विषय छल बड़ पुरान 'अनमेलविवाह' आ ते पूर्ण चोखगर नहि। 1975 ई० मे आबि हुनक ध्यान समसामयिक घटना सभ दिशि गेल आ शिक्षकक समस्याकेँ हुनक 'एक पूष्ट' कथा प्रतिनिधित्व करैत अछि। एहि कालमे राजकमल ओ सोमदेवमे भावनाकु जे आदान - प्रदान भेल। एक दिशि राजकमल छथि प्रयोग- वादक संग - संग स्पष्टतया मनोविश्लेषणात्मक तँ दोसर दिशि सोमदेवक उद्देश्य अछि - बहुमुख अपन काव्य कौशलसँ, अपन भावी स्वभावसँ, अपन जाति निरपेक्ष सार्वभौम अनुभूतिसँ पाठककेँ सुपरिचित करायब। .....

29|09|20